एम. सी. राजा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

गुंजन त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष एवं प्रोफ़ेसर

मुन्ना लाल एवं जयनारायण खेमका गर्ल्स

कॉलेज, सहारनपुर

अनुराधा

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (राजनीति विज्ञान विभाग)

कमला आर्य कन्या पी जी कॉलेज, मिर्ज़ापुर

सारांश- दक्षिण भारत में अनेक महापुरुष हुये है जिन्होंने सामाज सुधार से संबंधित अनेक कार्य किये है, उनमे से एक थे एम सी राजा | जो दक्षिण भारत के प्रमुख समाज सुधारको और दलितोद्धारकों में से एक है | इन्होंने दक्षिण भारत में ब्राह्मणवाद का खण्डन, जातिगत भेदभाव का विरोध, बाल विवाह निषेध, विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन, हिन्दू धर्म की रूढ़िवादी परम्पराओ का विरोध तथा छुआछूत का उन्मूलन आदि सामाजिक समस्याओ पर जोर दिया और समाज सुधार आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | इनके द्वारा किए गये सामाजिक और धार्मिक सुधार सम्बन्धी आंदोलन का भारतीय इतिहास में विशेष स्थान है | एम सी राजा दलित

वर्ग के लिए आदि-द्रविड़ या आदि-आंध्र से संबोधित करना ज्यादा पसंद करते थे | एम सी राजा ने दलितों को समाज में न्याय दिलाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये है जिसमे सबसे महत्वपूर्ण कार्य था दलित वर्ग के लिए प्रथक निर्वाचन क्षेत्र की मांग करना परन्तु कॉग्रेस के संपर्क में आने के बाद से उन्होंने संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र का समर्थन किया | उन्होंने इसके लिये डॉ. मुँजे के साथ मिलकर राजा-मुँजे समझौता किया | जो 1932 में हुये पुना-पैक्ट का अग्रदूत बना | संयुक्त निर्वाचन की हिमाकत करने के कारण कॉग्रेसियों के अलावा एम सी राजा भी थे जिनके वजह से अम्बेडकर को पुना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने को बाध्य होना पड़ा था | महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर और पेरियार द्वारा दलितों के उत्थान के लिए किए गए कार्यों ने आधुनिक भारत में एक एतिहासिक स्थिति हासिल की है | परन्तु एम सी राजा द्वारा किया गया दलितों के लिए उल्लेखनीय आजीवन संघर्ष भारतीय इतिहास का भूला हुआ पन्ना बनकर रह गया है | इसीलिए मैंने अपने शोध के लिए एम सी राजा का विश्लेषणात्मक अध्ययन चुना |

शब्द कुंजी- दलितोद्धारक, ब्राह्मणवाद, आदि-द्रविड, आदि-आंध्र, छुआछूत, विधवा पुनर्विवाह, राजा-मुँजे समझौता आदि |

एम सी राजा का व्यक्तिगत परिचय- इनका पूरा नाम राय बहादुर मिलै चिन्ना थंपी पिल्लई राजा है | परन्तु ये एम सी राजा के नाम से लोकप्रिय हुये | एम सी राजा का जन्म 17 जून 1883 में मद्रास के सेंट थॉमस माउंट में मिलै चिन्ना थंपी के घर हुआ था | ये बहुत गरीब परिवार में पैदा हुए थे | एम सी राजा की स्कूली शिक्षा बेस्ले मिशन हाई स्कूल रॉय पेट्टहा और वेस्ले कॉलेज में हुई | उन्होंने मद्रास क्रिश्चन कॉलेज से स्नातक किया और 1906 में एक स्कूल शिक्षक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया | इसके बाद से उन्होंने दलित वर्गों के शोषण और उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठानी शुरू की | इन्होंने स्कूल शिक्षक के बाद प्रोफेसर के रूप में भी काम किया | एम सी राजा का 21 अगस्त 1943 को सेंट थॉमस माउंट में उनके घर पर ही निधन हो गया था, जिसे आज 'राजा स्ट्रीट' का नाम दिया गया है |

एम सी राजा का राजनीतिक परिचय- एम सी राजा कम उम्र में राजनीति में शामिल हो गए थे और उन्हे चिंगलेपुट जिला बोर्ड का अध्यक्ष चुना गया | ये 1926 में आदि-द्रविड महाजन सभा के सचिव बने | ये साउथ इंडियन लिबरल फेडरेशन के संस्थापक सदस्यों में से एक थे | 1920 में हुए पहले आम चुनाव के दौरान राजा को जस्टिस पार्टी के उम्मीदवार के रूप में मद्रास विधान परिषद के लिए चुना गया था | इन्हे सदन में जस्टिस पार्टी का उपनेता चुना गया था |

एम सी राजा मद्रास विधान परिषद के लिए चुने जाने वाले अनुसूचित जाति समुदाय के पहले सदस्य थे | 1922 में राजा ने एक प्रस्ताव पारित कर मांग की कि परैया और पंचमा को आधिकारिक उपयोग से हट दिया जाना चाहिए और इसके बजाय आदि-द्रविड या आदि-आंध्र से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए | एम सी राजा ने आगे चलकर अपनी मांगे पूरी ना होने के चलते जस्टिस पार्टी से नाराज होकर 1923 में इस पार्टी को छोड़ दिया | 1925 में उन्होंने नागपुर में अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ का गठन किया और अध्यक्ष बने | अप्रैल-जुलाई 1937 के दौरान वे कुरमा वेंकट रेड्डी नायडू के अल्पकालिक अंतरिम केबिनेट में एम सी राजा मद्रास प्रेसिडेंसी के विकास मंत्री भी बने |

एम सी राजा के समाज सुधार के सम्बन्ध में किए गए महत्वपूर्ण कार्य-

एम सी राजा ने समाज सुधार के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए है | एम सी राजा का सबसे प्रमुख कार्य दलित वर्ग को उनका अधिकार दिलाना था, छुआछूत का घोर विरोध करना था | एम सी राजा ने दलित लोगों के लिए अनिवार्य और मुफ़्त शिक्षा की मांग उठाई | उन दिनों दलित वर्ग में एम सी राजा जैसे पढे लिखे लोग कम ही मिलते थे | यही कारण था की उन्होंने जल्द ही ब्रिटिश सरकार का ध्यान आक्रषित किया | 1922 में एम सी राजा को राय बहादुर की उपाधि से नवाजा गया | पूरे भारत में एम सी राजा को दलितों के एक प्रमुख नेता के रूप में पहचाना जाने लगा | 1932 में गांधी जी के अनशन और पुना पैक्ट के दौरान 1933 से सेंट्रल असेंबली के मंदिर प्रवेश विधायकों में एम सी राजा की भूमिका महत्वपूर्ण थी | दलित वर्गों की समस्या का समाधान करने के लिए और उन्हे अन्य हिन्दुओ के साथ समानता दिलाने के लिए 1032 में एम सी राजा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ की कार्यसमिति की बैठक दिल्ली में हुई | बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमे आगामी संविधान में दलितों का प्रतिनिधित्व प्रथक निर्वाचक मण्डल के बजाय प्रांतवार सीट आरक्षण के साथ संयुक्त निर्वाचन मण्डल पर आधारित किया गया |

एक अन्य प्रस्ताव में कहा गया था कि संविधान में दलितों को दलित वर्ग के रूप में संबोधित करने के बजाय आदि हिन्दू के रूप में संबोधित किया जाना चाहिये | उसी बैठक में हिन्दू महासभा और दलित वर्ग संघ में डॉ. मुँजे (जो उस समय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष थे) के सुझाव का स्वागत किया और एक संयुक्त निर्वाचन मण्डल के लिये एक समझौता किया, इसे **राजा मुँजे समझौता** के नाम से जाना जाता है | यह समझौता आरक्षण पर पहला समझौता था और सवर्ण हिन्दुओ एवं दलितों के बीच एक संयुक्त निर्वाचन था | इस समझौते की तरह महात्मा गांधी और

अम्बेडकर के बीच हस्ताक्षरित पुना पैक्ट ने भी दलित वर्गों के लिए संयुक्त निर्वाचन का पक्ष लिया | इसीलिए राजा-मुँजे समझौता, दलित वर्गों का मैग्नाकार्टा, पुना पैक्ट का अग्रदूत माना जाता है |

एम सी राजा के जातिवाद और धार्मिक अंधविश्वास संबंधी विचार- दक्षिण भारत के प्रमुख दलित नेता एम सी राजा जातिवाद एवं ब्रह्मणवाद के घोर विरोधी थे | एम सी राजा ने दलितों की समस्या समाधान पर व्यापक बाल दिया और दलितों को अन्य हिन्दुओ के समान सामाजिक समानता दिलाने के लिए जीवन भर कार्य किये | जब महात्मा गांधी ने दलित वर्ग को हरिजन के रूप में संबोधित किया तो एम सी राजा ने गांधी जी का विरोध किया तथा हरिजन शब्द स्वीकार करने से मना कर दिया | उन्होंने दलित वर्गों के उत्थान के लिए मजबूत नीव रखी | एम सी राजा धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के कट्टर विरोधी थे इन्होंने मनुस्मृति का भी दहन किया | ये पहले नेता थे जिन्होंने भारत में राष्ट्रीय स्तर पर अनुसूचित वर्गों का आयोजन किया | ये स्वतंत्र भारत के प्रमुख अनुसूचित वर्ग के नेता रहे |

एम सी राजा और कॉंग्रेस-एम सी राजा अपने राजनीतिक जीवन में गांधी और कॉंग्रेस पार्टी के घोर आलोचक रहे | गोलमेज सम्मेलन के मद्देनजर उनके प्रति अचानक उदार हो गए | बादमें एम सी राजा का झुकाव कॉंग्रेस की तरफ हो गया था | कॉंग्रेस में जाकर वे ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लासेज एसोसिएशन के अध्यक्ष बन गए थे | कॉंग्रेस में जाकर एम सी राजा ने पृथक निर्वाचन पद्धति के सम्बन्ध में अपना पक्ष बदल दिया | अब वे कॉंग्रेस के सुर में सुर मिलाते हुये संयुक्त निर्वाचन पद्धति का समर्थन करने लगे | बदले में वे चाहते थे कि कॉंग्रेस डिप्रेस्ड क्लासेज एसोसिएशन के उम्मीदवार के लिए कुछ सीटे सुरक्षित रखे | संयुक्त निर्वाचन की हिमाकत करने के कारण कॉंग्रेसियों के अलावा एम सी राजा भी थे जिनके वजह से अम्बेडकर को पुना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने को बाध्य होना पड़ा था |

एम सी राजा और डॉ. अम्बेडकर- डॉ अम्बेडकर से दस साल पहले जन्मे एम सी राजा मद्रास प्रांत के आदि द्रविड महाजन सोसायटी के सचिव थे और जब तक डॉ अम्बेडकर 1917 में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद भारत लौटे तब तक एम सी राजा ने खुद को दलित वर्ग के नेता के रूप में स्थापित कर लिया था | 1932 में गांधी जी अनशन और पुना पैक्ट के दौरान 1933 में सेंट्रल असेंबली में मंदिर प्रवेश विधायकों में एम सी राजा की भूमिका महत्वपूर्ण थी | अम्बेडकर और राजा को दलित प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था | इन्हे वायसराय ने 1942 में क्रिप्स

मिशन के दौरान क्रिप्स से मिलने के लिए चुना था | दोनों को अलग अलग आमंत्रित किया गया था | वायसराय लिनलिथगो दलितों की बड़ी संख्या होने के कारण उनकी राजनीतिक स्थिति को पहचानने का आग्रह किया | लेकिन वायसराय को चिंता थी कि बड़ी संख्या में होने के बावजूद इसमें कोई सरकार द्वारा पदोन्नत किए जाने योग्य है या नहीं | लिनलिथगो ने अपने पत्रों में केवल तीन सक्षम दलित नेताओ का उल्लेख किया | जिनमे डॉ अम्बेडकर, एम सी राजा और एन शिवराज थे जिन्होंने एम सी राजा और अम्बेडकर दोनों को राष्ट्रीय रक्षा परिषद में शामिल किया | दक्षिण भारत में प्रमुख दलित नेता एम सी राजा राष्ट्रीय नेता के रूप में डॉ अम्बेडकर से पहले उभरे थे | ये शुरुआत में डॉ अम्बेडकर के सहयोगी थे और अम्बेडकर के नेतृत्व में काम करते थे|

दलितों के प्रश्न पर पृथक निर्वाचन पद्धति की उन्होंने जोरदार शब्दों में वकालत की थी | देश के भावी राज्य घटना के सम्बन्ध में ब्रिटिश क्रिप्स योजना को जो विरोध पत्र सौपा गया था | उसमें डॉ अम्बेडकर के साथ एम सी राजा के हस्ताक्षर भी थे | विरोध पत्र में कहा गया था कि दलितों की मांगे मंजूर किया बिना कथित भावी संविधान का कोई अर्थ नहीं है | भारत की स्वाधीनता के सम्बन्ध में लंदन गोलमेज सम्मेलन के द्वितीय सत्र में राव बहादुर श्री निवासन के साथ एम सी राजा और अम्बेडकर भी शामिल हुये थे | बादमें एम सी राजा का झुकाव कॉग्रेस की तरफ हो गया था और कॉग्रेस के सम्पर्क में आने के बाद राजा ने पृथक निर्वाचन पद्धति की जगह संयुक्त निर्वाचन पद्धति का समर्थन करने लगे | जिसके दबाव के चलते डॉ अम्बेडकर को पुना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े | हालांकि बादमें एम सी राजा को अपनी करनी पर भारी पछतावा हुआ मगर अब समय बीत चुका था | 1928 में एम सी राजा ने ऑल इंडिया डिप्रेस्ड कास्ट्स एसोसिएशन की स्थापना की | वास्तव में इन्हे काँग्रेस ने दलित जातियों में डॉ अम्बेडकर के नेतृत्व को चुनौती के रूप में खड़ा किया था | किन्तु एम सी राजा 1942 में इसे छोड़कर शेड्युल्ड कास्ट्स फेडरेशन में शामिल हो गये थे |

एम सी राजा और जस्टिस पार्टी- एम सी राजा 1916 में गठित साउथ इंडियन लिबरल फेडरेशन के संस्थापकों में से एक थे | तमिलनाडु में जस्टिस पार्टी गैर ब्राह्मणों की राजनीतिक पार्टी थी | 1920 के पृथक आम चुनाव में जस्टिस पार्टी के टिकिट पर एम सी राजा विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुये | मद्रास लेजिसलेटिव काउन्सिल में वे एक मात्र दलित नेता थे | काउन्सिल में राजा ने कुछ मांगे रखी थी कि दलित जातियों के लिए परैया या पंचम बोलने का निषेध कर आधिकारिक भाषा में आदि-द्रविड या आदि-आंध्र कहा जाये |

1921 में जस्टिस पार्टी के सरकार ने पिछड़ी जातियों के लिये सरकारी नौकरियों में आरक्षण देने की बात की थी, इस बिल में दलित जातियों के लिए आरक्षण की बात नहीं की गयी थी राजा ने उस वक्त बिल का विरोध करते हुये दलित जातियों को भी इसमे सम्मिलित करने की मांग की थी | राजा ने अपनी मांग का कोई असर ना देख 1923 में जस्टिस पार्टी से इस्तिफा दे दिया था |

निष्कर्ष एवं सुझाव- दक्षिण भारत की सबसे प्रमुख समस्या थी जातिवाद एवं ब्रह्मणवाद | जिसमे ब्राह्मणों के अलावा किसी को ऊंचा दर्जा नहीं दिया जाता था | ब्राह्मणों के अलावा किसी और को विशेषकर दलितों वर्ग को पढ़ने लिखने की अनुमति नहीं थी | एम सी राजा दक्षिण भारत के प्रमुख समाज सुधारको में से एक है | इन्होंने ना केवल दक्षिण भारत की सामाजिक बुराइयों बल्कि पूरे भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये आजीवन संघर्ष किया | दलित वर्ग सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग नहीं कर सकते थे ना ही ऊंची जाति के लोगों के साथ उठ बैठ सकते थे | यह स्थिति पूरे भारत में बनी हुई थी लेकिन दक्षिण भारत में ब्राह्मणों का वर्चस्व ज्यादा था और दलितों की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी | एम सी राजा धर्म के आधार पर होने वाले शोषण के घोर विरोधी थे | दलितों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए, अन्य जातियों के समान ऊंचा उठाने के लिये की महत्वपूर्ण कार्य किये | जिसमे सबसे महत्वपूर्ण कार्य था दलित वर्गों के लिए प्रथक निर्वाचन क्षेत्र की मांग परंतु बादमे उन्होंने कॉग्रेस के संपर्क में आने के बाद से संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र की मांग पर जोर देने लगे | जिसके फलस्वरूप हुआ **राजा-मुँजे समझौता** अत्यंत महत्वपूर्ण था | जो पुना-पैक्ट का अग्रदूत या आधार बना | राजा मुँजे समझौते से दलितों के लिये पृथक आरक्षण की मांग की गयी थी |

भारत के लोगों को आज दक्षिण भारत के इस महान समाज सुधारक एम सी राजा के जीवन दर्शन और विचारों को जानने तथा इनके आदर्शों को ग्रहण करने की आवश्यकता है | इस समय समाज में अनेक सामाजिक कुरीतिया विघमान है | अतः हमारे नवयुवकों को इनके आचरण का अनुसरण करना चाहिए |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. एम सी राजा, एन अनफोरगेटेबल दलित वॉयस लाइफ, राइटिंग एण्ड स्पीचेस ऑफ एम सी राजा, संपादक स्वराज बसु, 2012
2. अमृत ऊकई, एम सी राजा, 30 दिसंबर 2013

3. एम सी राजा, द ओप्रेस्ड हिंदूज, 2005
4. Wikipedia.org, एम सी राजा
5. Forwardpress.in, अम्बेडकर और पेरियार
6. मीनाक्षी जैन और देवेन्द्र स्वरूप, राजा-मुँजे पैक्ट, 16 अगस्त 2016
7. कॉमन फॉक्स, एम सी राजा की पुस्तके
8. Centre for indic studies, एम सी राजा कोन थे? 29 मई 2021
9. Swarajya, राजा-मुँजे पैक्ट, 16 अगस्त 2016
10. इंडियन स्ट्रोम्स रिसर्च जर्नल, एम सी राजा अम्बेडकर के अग्रदूत और राजा मुँजे पैक्ट पुना पैक्ट का अग्रदूत, 2013
11. Forwardpress.in, बौद्धिक मेल और मतभेद, 2017
12. डॉ. जी. थंगावेलु, एम सी राजा द मॉर्निंग स्टार ऑफ दलित्स अप्राइसिंग ऑफ तमिल नाडु, अप्रैल 2009